Quadrant II –Notes

Programme: Bachelor of Arts (Second Year)

Subject: Hindi

Paper Code: HNC 104

Paper Title: DSC: आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य: परिचयात्मक अध्ययन (1850-1960)

Unit: 1

Module Name: प्रेमचंद युगीन कहानी

Module No: 02

Name of the Presenter: Ms. Shambhavi Naik

Notes:

प्रेमचंद युगीन कहानी

- प्रेमचंद हिन्दी के युगप्रवर्तक कहानीकार माने जाते हैं।
- पहले वे 'नवाबराय' के नाम से उर्दू में लिखते थे।
- उर्दू में लिखा हुआ उनका कहानी संग्रह 'सोजे वतन' 1907 ई. में प्रकाशित हुआ था। 'सोजे वतन' स्वातंत्र्य भावना से ओतप्रोत होने के कारण अंग्रेज सरकार ने जब्त कर लिया था।
- कालातंर में वे हिन्दी में 'प्रेमचंद' नाम से लिखने लगे और उनका यह नाम कथा साहित्य में अमर हो गया।
- उनकी पहली हिन्दी कहानी 'पंच परमेश्वर' सन् 1916 ई. में प्रकाशित हुई। और अंतिम कहानी 'कफन' जो 1936 ई. में प्रकाशित हुई।
- मुंशी प्रेमचंद ने अपने जीवन काल में लगभग 300 कहानियों की रचना की, जो 'मानसरोवर' के आठ खंडों में प्रकाशित हुई है।
- प्रेमचंद की कहानियों में विषय वैविध्य दिखाई पड़ता है।

- किसी अन्य कथाकार ने जीवन के इतने व्यापक फलक को अपनी कहानियों में नहीं समेटा, जितना प्रेमचंद ने।
- उनकी कहानियाँ अपने परिवेश से, अपने आसपास के, जीवन से जुड़ी हुई है।
- उनकी अधिकांश कहानियों का विषय ग्रामीण जीवन से लिया गया है, किन्तु कई कहानियाँ कस्बे की जिंदगी या स्कूल-कॉलेज से भी जुड़ी हुई है।
- उनकी कहानियों के पात्र हर वर्ग, धर्म, जाति के हैं। कोई हिन्दू है तो कोई मुसलमान, कोई किसान है, तो कोई विद्यार्थी।
- अपनी कहानियों में उन्होंने विविध समस्याओं को भी उठाया है – जमींदारों के द्वारा किसानों के शोषण की समस्या, छुआछूत की समस्या, रूढ़ि एवं अंधविश्वास, संयुक्त परिवार की समस्या, भ्रष्टाचार एवं व्यक्तिगत जीवन की समस्या आदि।
- प्रेमचंद की प्रारम्भिक कहानियों में आदर्श का पुट दिखाई देता है।
- पंच परमेश्वर, आत्माराम, प्रेरणा, ईदगाह, नमक का दारोगा आदि कहानियों का उद्देश्य है – सच्चे का बोलबाला और झूठे का मुँह काला।
- 'पूस की रात' और 'कफन' तक आते-आते उनका दृष्टिकोण परिवर्तित हो गया।
- 'पूस की रात' में विकट सर्दी में खेत की रखवाली करने वाले किसान हलकू के लिए कम्बल भी न जूट पाने की विषम पीड़ा है। हलकू को समाज या मनुष्य की अपेक्षा साथी कुत्ता अधिक निकट अनुभव होता है। अंत में पत्तियों की आग ताप कर वह निश्चिंत सो जाता है। सुबह, खेत जंगली जानवरों द्वारा उजड़ा देखकर वह दुखी नहीं होता। सोचता है, चलो! अब रात में आराम मिलेगा।
- 'कफन' कहानी में वृद्ध घीसू और उसका युवा पुत्र माधव दोनों निकम्मे है और हृदयहीन है। उन्होंने देखा है श्रम करने वाले किसान भूखे मरते है, तो उन्हों ने तय किया कि क्यों न मौज में रहे।

- वे पेट भरने के लिए जब-तब कोई चोरी करते थे। माधव कि पत्नी बुधिया मेहनत से दोनों का पेट भरती थी। बुधिया के प्रसवकाल में, वे अपेक्षापूर्वक मर जाने देते है। उसके कफन के लिए पैसे इकट्ठा करके, उस पैसे की शराब पी जाते है। उनकी दशा, हमारे मन में उनके लिए घृणा की अपेक्षा, उन्हें ऐसा बना देनेवाली सामाजिक व्यवस्था के प्रति अधिक आक्रोश जगाती है।
- अब वे जीवन के यथार्थ से जुड़ गए थे।
- स्पष्ट है कि उनकी पहले वाली कहानियाँ आदर्शवादी है और बाद में लिखी गई यथार्थवादी कहानियाँ है।
- प्रेमचंद की प्रमुख कहानियों में – पंच परमेश्वर, सवा शेर गेहूं, आत्माराम, माता का हृदय, शतरंज के खिलाड़ी, बड़े भाई साहब, ठाकुर का कुआं, ईदगाह, पुस की रात, कफन के नाम लिए जा सकते है।
- प्रेमचंद के समकालीन कहानीकारों में सुदर्शन, प. विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', जयशंकर प्रसाद, चतुरसेन शास्त्री, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', भगवतीचरण वर्मा आदि उल्लेखनीय है।
- सुदर्शन ने अपनी कहानियों का विषय जीवन की ज्वलन्त समस्याओं को बनाया है।
- उनकी कुछ प्रसिद्ध एवं चर्चित कहानियाँ है- 'हार की जीत', 'दो मित्र', 'ऐथेंस का सत्यार्थी'
- उनकी कहानियों में सुधारवादी दृष्टिकोण के साथ-साथ अंतर्द्वंद्व की प्रधानता है।
- कौशिक जी की प्रथम कहानी 'रक्षाबंधन' सन् 1912 में ही प्रकाशित हो चुकी थी तथापि उनकी कहानी कला में निखार बाद में ही आया।
- लगभग 200 कहानियाँ लिखी है, जो उनके कहानी संग्रहों में प्रकाशित है।
- उनकी कहानियों का विषय था – दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह एवं अंधविश्वास।
- 'ताई', 'रक्षाबंधन', 'विधवा' उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ है।

- प्रेमचंद युग में एक प्रतिभाशाली कथाकार के रूप में जयशंकर प्रसाद का नाम लिया जाता है।
- उनकी कहानियों में कल्पना की प्रचुरता, प्रेम चित्रण, दिखाई देता है।
- उनकी कुछ कहानियों में ऐतिहासिक देशकाल एवं वातावरण की सफल प्रस्तुति की गई है।
- प्रेम, करुणा, त्याग, बलिदान इनके कहानी के विषय है।
- उन्होंने उच्चकोटि के नारी चरित्र अपनी कहानियों में प्रस्तुत किए हैं जो अपने निश्चल प्रेम, बलिदान और त्याग से पाठकों पर अमित छाप छोड़ते है।
- 'ग्राम' उनके साहित्यिक जीवनकाल की सर्वप्रथम कहानी है।
- उनके प्रमुख कहानी संग्रह है – 'छाया', 'आकाशदीप', 'इंद्रजाल'
- 'पुरस्कार', 'इंद्रजाल', 'आकाशदीप', 'ममता' आदि उल्लेखनीय कहानियाँ है।
- आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने ऐतिहासिक विषयों पर मार्मिक कहानियों की रचना की है।
- 'रूठी रानी', भिक्षुराज', 'सिंहगढ़ विजय' आदि उनकी प्रमुख कहानियाँ है।
- प्रेमचंद युगीन कहानीकारों में पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' एक उल्लेखनीय कथाकार है।
- सामाजिक यथार्थ को नग्न रूप में पेश करने में वे सिद्धहस्त कथाकार माने जा सकते है।
- उनके प्रमुख कहानी के संकलन इस प्रकार है – 'शैतान मण्डली', 'बलात्कार', 'चाकलेट'
- भगवतीचरण वर्मा की 'दो बाँके', मुगलों ने सल्तनत बख्श दी', 'प्रायश्चित' कहानियों में व्यंग्य दिखाई देता है।
- निष्कर्षतः प्रेमचंद युग में कहानी ने अपने स्वरूप को संवारने एवं निखारने का काम किया। उसके विषय वैविध्य एवं शिल्प सजगता का विकास हुआ।

- इस काल की कहानियों में पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक समस्याओं का चित्रण ही प्रधान रूप से हुआ है।
- व्यक्ति चरित्र एवं नारी को इस काल में प्रमुखता दी जाने लगी थी तथा शैली एवं शिल्प की दृष्टि से कहानी प्रौढ़ता प्राप्त कर रही थी।